प्रातःक्लास शुक्रवार ओमशांति 14–4–67

अक्सर करके देखा है जाता। प्रदर्शनी के समाचार भी जाते हैं तो मूल बात जो बाप के पहचान की है उस पर ही पूरा निश्चय ना बिठाने से बाकी जो कुछ समझाते रहते हैं वो कोई की बुद्धि में बैठना मुश्किल है। भल अच्छा2 कहते हैं ;परंतु बाप की पहचान नहीं। पहले तो बाप की पहचान हो। बाप के महावाक्य है मुझे याद करो। मैं ही पतित–पावन हूँ। मुझे याद करने से ही तुम पतित से पावन बन जावेंगे। यह है मुख्य बात। तो पहले2 चाहिए बाप की पहचान। यह बुद्धि में बैठे कि भगवान एक है। वो ही पतित–पावन है। ज्ञान का सागर ,सुख का सागर है। वो ही उंच ते उंच है। अगर यह निश्चय हो जावे तो फिर और जो भक्ति के जो भी वेद–शास्त्र हैं अथवा गीता भागवत है सब खंड न हो जाते हैं। भगवान तो खुद आकर कहते हैं कि यह मैंने तो नहीं समझाया है। मेरा ज्ञान ही नहीं है। शास्त्रों में है ही भक्तिमार्ग का ज्ञान। मैं तो ज्ञान देकर सदगति करके चला जाता हूँ। फिर यह ज्ञान प्रायःलोप हो जाता है। ज्ञान की प्रारब्ध पूरी होने के बाद फिर भक्तिमार्ग शुरू होता है। भक्तिमार्ग के शास्त्र सब खंडन किये हुए हैं। जब बाप का निश्चय बैठ जावे तब समझे भगवानवाच्य यह भक्तिमार्ग के शास्त्र हैं। ज्ञान और भक्ति आधा2 समझ लेते हैं। भक्ति में ज्ञान होता नहीं है। इसलिए यह जो भी शास्त्र हैं सब भक्तिमार्ग की सामिग्री है। इनमें भगवानोवाच्य है नहीं। भगवान जब आते हैं तो आकर अपना परिचय देते हैं। यह भी जानते हैं भक्ति से दुर्गति होनी ही है। इनमें सब झूठ ही झूठ है। सच्च है नहीं। कौन कहते हैं कि कल्प लाखों वर्षों का है?मैं तो कहता हूँ कल्प 5000वर्ष का है। मैं तो इस मुख से समझा रहा हूँ। तो पहले2 मुख्य बुद्धि में पहुंचानी है कि भगवान कौन है यह बात जब तक बुद्धि में नहीं बैठी है तब तक बाकी सब समझाने का असर नहीं रहेगा। सारी मेहनत ही इस बात में हैं। बाप आते ही है कब्र से जगाने। शास्त्र आदि पढ़ने से तो नहीं जागेंगे ना। परमपिता परमात्मा है ज्योति स्वरूप ;परंतु तुम बच्चों की आत्मा पतित बनी हुई है (जिस) कारण ही तुम बच्चों की ज्योति उझानी हुई है। तमोप्रधान हो गई है। पहले2 बाप का परिचय ना देने से फिर तो जो भी मेहनत आदि करते हैं, ओपीनियन आदि लिखाते हैं वो कुछ भी काम का नहीं रहता है। इसलिए सर्विस होती नहीं है। निश्चय हो तो बरोबर समझे कि हां, ब्रह्मा द्वारा ज्ञान दे रहा है। मनुष्य ब्रह्मा को देखकर कितना मूंझते हैं ;क्योंकि बाप की पहचान नहीं है। यह शास्त्र आदि सब भक्तिमार्ग की झूठी सामिग्री है। इसलिए ही झूठ खंड हो गया है। तुम बच्चे अभी जानते हो कि भक्तिमार्ग अब पास हो गया है। कलियुग में है भक्तिमार्ग और अब संगम पर है ज्ञान मार्ग। हम संगमयुगी हैं। राजयोग सीख रहे हैं। दैवी गुण धारण करते हैं नई दुनियां के लिए। जो संगमयुग में नहीं वो दिन–प्रतिदिन तमोप्रधान बनते ही जाते हैं। उस तरफ तो तमोप्रधानता बढ़ती जाती है। उस तरफ तुम्हारा संगम पूरा होता जाता है। यह समझने की बातें हैं ना। समझने वाले भी नम्बरवार हैं ना। बाबा रोज की ताकीद करते रहते हैं कि पहले2 जब तक एक बाप का परिचय नहीं होगा तब तक कुछ भी समझ में बैठेगा नहीं। निश्चय बुद्धि विजयंति। बच्चों में तिक2 करने की आदत बहुत है। बाप को याद करते ही नहीं। याद करना बड़ी कठिन है। बाप को याद करना कराना छोड़कर अपनी ही तिक2 सुनाते रहते हैं। बा पके निश्चय बिना और चित्रों तरफ बढ़ाना ही नहीं चाहिए। निश्चय ही नही ंतो कुछ भी समझेंगे नहीं। अल्फ का ही निश्चय नही ंतो बाकी बात में थोथरा मारना है। इसलिए ही टाइम वेस्ट बहुत करते हैं। किसी की नब्ज को जानते नहीं हैं।.....करने वाले को भी पहले2 बाप का परिचय देना है कि यह है उंच ते उंच ज्ञान का सागर। बाप यह ज्ञान अभी ही देते हैं। सतयुग में इस ज्ञान की दरकार ही नहीं रहती है। पीछे शुरू होती है भक्ति। इसको कहा जाता है दुर्गति। बाप के लिए ही दुर्गति का आवाज निकलता है। इसलिए बाप कहते हैं कि जब दुर्गति पूरी अर्थात् मेरी निंदा पूरी होने का समय होता है तो मैं आता हूँ। आधा कल्प उनको निंदा करनी ही है। जिनकी भी पूजा

करते हो उनके ही आक्युपेशन का पता ही नहीं। तुम बच्चे बैठ समझाते हो। खुद का ही .... बाबा से योग नहीं तो दूसरों को ही क्या समझावेंगे?भल शिवबाबा कहते हैं ;परंतु योग में रहते नहीं हैं तो विकर्म भी विनाश नहीं होते हैं। धारणा नहीं होती है। मुख्य बात ही है एक बाप को याद करना। बाकी टीं—टीं कितना भी करें। योग नहीं तो कोई काम का नहीं। फिर देहअभिमानी जरूर होगा। किस ना किसको तंग करते रहेंगे। बच्चे भाषण आदि करते हैं फिर समझते हैं कि हम ज्ञानी तू आत्मा हैं। बाप कहते हैं ज्ञानी तू आत्मा तो हो, टां—टां बहुत करते रहते हो। मैं कब कहता हूँ कि नहीं ;परंतु योग बहुत कम है। योग पर पुरुषार्थ बहुत कम है। बाप कितना समझाते रहते हैं चार्ट रखो। मुख्य है ही योग की बात। बच्चों में ज्ञान की टीं—टीं बहुत है। योग नहीं है तो बाकी तिक2 से फायदा नहीं होता है। योग बिना विकर्म विनाश नहीं होगा। योग में तो बहुत बच्चे फेल होते हैं। समझते हैं 40प्रतिशत याद में रहते हैं ;परंतु बाबा कहते हैं वा 2प्रतिशत है। बाबा खुद कहते हैं भोजन खाने समय याद में रहता हूँ। फिर भूल जाता हूँ। स्नान करता हूँ तो भी बाबा को याद करता हूँ। भल उनका बच्चा हूँ ;परंतु याद तो करना है। फिर भी याद भूल जाता हूँ। समझते हो यह तो नम्बरवन में जाने वाले हैं। जरूर ज्ञान और योग ठीक होगा। फिर भी बाबा कहते हैं कि योग में बहुत मेहनत है। ट्रायल करे देखो फिर अनुभव सुनाओ। समझो दर्जी कपड़ा सिलाई करते हैं। देखे बाप की याद में रहता हूँ। बहुत मीठा माशूक है। उनको जितना याद करेंगे तो हमारे विकर्म विनाश होंगे। हम सतोप्रधान बन जावेंगे। अपने को देखना है हम कितना समय याद मे रहते हैं। बाबा को फिर रिजल्ट बतानी चाहिए। योग में रहने से ही कल्याण होगा। बाकी तिक2 से कोई कल्याण नहीं होगा। समझते कुछ भी नहीं। अल्फ बिगर काम ही कैसे चलेगा?एक अल्फ का पता नही तो बाकी तो जीरो2 हो जाता है। अल्फ के साथ जीरो लगाने से फायदा होता है। योग नहीं है तो सारा दिन समय खराब करते रहते हैं। बाबा को तो तरस पड़ता है ओफ! बिचारे क्या पद पावेंगे?तकदीर में नहीं है तो बाप भी क्या करे। बाप तो बार2 समझाते रहते हैं कि दैवी गुण अच्छे रखो। बाप की ही याद में रहो। बाप से लव भी होगा तब ही श्रीमत पर चल सकेंगे। प्रजा तो ढेर बननी है। तुम यहां आये ही हो यह बनने। उसमें मेहनत है। भल स्वर्ग में भी जावेंगे ;परंतु सजायें खाकर पिछाड़ी में आकर कुछ पद पावेंगे। बाबा तो सब बच्चों को जानते हैं ना। बाप कहते हैं योग में बहुत कच्चे है। इसलिए थोड़ी ही बात में रूसते—झगड़ते रहते हैं देहअभिमान में आकर। मुख्य बड़े2 बच्चों का यह हाल है। योग है नहीं। योग वाले की चलन बड़ी रॉयल शानदार होगी। बहुत कम बोलेंगे। यज्ञ सर्विस में भी रूचि। यज्ञ सर्विस में हड्डियां भी चली जावें ;परंतु बाबा कहते हैं याद में जास्ती रहेंगे तो बाप से लव होगा। कोई2 हैं तो मुख्य ये बात पर ही पकड़ते हैं कि गीता किसने गाई?कृष्ण का नाम देकर गीता को खंडन कर दिया है। इसलिए ही भारत इतना हीन हुआ है। ड्रामा में यह भी नूंध है। गिरना ही है। गिरते हैं भक्ति द्वारा। बाप की बैठ निंदा करते हैं। भारत में जितनी भगवान की निंदा करते हैं उतना कोई दूसरे खंड में नहीं करते हैं। बाप कहते हैं मैं आता भी भारत खंड में ही हूँ। बाप कहते हैं मैं आता भी भारत में ही हूँ। आत्मा को आकर उंच बनाता हूँ। भक्तिमार्ग में है दुर्गति ;परंतु किसी को भी पता नहीं पड़ता है। ज्ञान ही नही तो समझे भी कैसे कि भक्ति दुर्गति है। किसी को भक्ति दुर्गति कहो तो बिगड़ पड़ते। मुख से कहते हैं सदगति दाता पतित—पावन आओ। तो दुर्गति में हैं ना। बाप कहते सतयुग मे तो विश्व के मालिक थे। सदगति मे थे। फिर दुर्गति किसने दी?कब से शुरू हुई?भक्ति से। आधा कल्प लिए सदगति ,एक सेकेंड में पाते हैं। 21जन्मों का वर्सा पा लेते हैं। फिर बाकी है भक्ति मार्ग। जब भक्ति मार्ग है तो ज्ञान नहीं। तो जब भी कोई अच्छा आदमी आवे तो पहले2 उनको बाप का परिचय दो। बाप कहते हैं बच्चे इस ज्ञान से ही तुम्हारी सदगति होगी। फिर दुर्गति कौन करते हैं?रावण

तुम बच्चे जानते हो यह ड्रामा चल रहा है सेकेंड वा सेकेंड। यह बुद्धि में याद रहे तो भी तुम अच्छी रीति समर्थ हो सकते हो। यहां बैठो तो भी बुद्धि में रहता है कि यह सृष्टि चक्र कैसे जूं की तरह फिरता रहता है। सेकेंड वा सेकेंड टक–टक होती रहती है। ड्रामा अनुसार ही सारा पार्ट बज रहा है। एक सेकेंड पास हुआ ,खतम। रोल होता ही जाता है। बहुत धीरे2 फिरता है। यह है बेहद का ड्रामा। बूढ़े आदि जो हैं उनकी बुद्धि में यह बातें बैठ नहीं सकती। ज्ञान भी बैठ ना सके। योग भी नहीं। फिर भी बच्चे तो हैं। हां, सर्विस करने वालों का पद उंच। बाकी का पद कम होगा। यह खयाल में पक्का रखो कि यह बेहद का ड्रामा है। सृष्टि का चक्र फिरता रहता है। जैसे रिकार्ड भरा रहता है ना। हमारी आत्मा में भी ऐसे ही रिकार्ड भरा हुआ है। आत्मा है बहुत छोटी से छोटी। इनमें इतना सारा पार्ट भरा हुआ है। इसको ही कुदरत कहा जाता है। देखने में तो कुछ भी नहीं आता है। यह समझ की बातें हैं। मोटी बुद्धि वाले समझ नहीं सकते हैं। इसमें बहुत मूंझते हैं। आत्मा में कैसे पार्ट भरा हुआ है। देखने में कहां आता है। यह तो अनादि अविनाशी ड्रामा है ना। हम जो बोलते वो ड्रामा में पार्ट पास होता जाता है। फिर 5000वर्ष बाद रिपीट होगा। ऐसी समझ कोई पास नहीं है। जो बड़े2 महारथी होंगे वो बार2 इन बातों पर ध्यान देकर समझाते रहेंगे। तो ही बाप कहते हैं पहले2 तो गांठ बंधवाओ बेहद के बाप की याद की। बाप कहते हैं मुझे याद करो। आत्मा को अब घर जाना है। देह के सब सम्बंध छोड़ दे जो है। जितना हो सके बाप को याद करो। यह पुरुषार्थ है गुप्त। बाप राय देते हैं जितना हो सके बाप को याद करो। परिचय भी बाप का ही दो। याद कम करते हैं तो परिचय भी कम देते हैं। बाकी तो तिक2 है। रोला सारा ही एक बात में है। पहले तो बाप का परिचय बुद्धि में बैठे। फिर कहा अब लिखो कि बरोबर वो बाप है। देह सहित सब कुछ छोड़ एक बाप को याद करना है। याद से ही तुम तमोप्रधा से सतोप्रधान बनेंगे। मुक्तिधाम जीवनमुक्तिधाम में तो दुःख–दर्द होता ही नहीं है। मूल बात ही पहले2 यह समझानी है। दिन–प्रतिदिन अच्छी बातें समझाई जाती हैं। आपसे में भी यही बातें करो। लायक भी बनना चाहिए। ब्राह्मण होकर भी बाप की रुहानी सेवा नहीं की तो वो बच्चा किस काम का?पढ़ाई की तो अच्छी रीति धारणा करनी चाहिए ना। बाबा जानते हैं बहुत हैं जिनको एक अक्षर भी धारणा नहीं होती है। यथार्थ रीति बाप को याद करते नहीं। प्रदर्शनी में कितना खर्चा होता है। लिखते हैं 2/3 हजार आये। फिर उनसे कितने निकले?कहां तो 5/7/10 कहां एक भी नहीं। बाप का परिचय उनको मिला तो भी शुक्र है। समझाने की तरकीब कोई में है नहीं। हां, बाकी प्रजा (ढेर) बनती है। बाबा कब कहते हैं कि नहीं ;परंतु राजायें तो मुश्किल ही कोई बनते हैं ना। एक राजा–रानी बाकी हो गई सारी प्रजा। मिट मायेट भी उनके अंडर हो जाते हैं ना। सब एक के अंडर रहते हैं। यह राजाई का पद पाने में ही मेहनत है। बाकी सब अंडर में आ जाते हैं। जो मेहनत करेंगे वो ही उंच पद पावेंगे। मेहनत करे तब राजाई में जा सकते हैं। नम्बरवन को ही स्कालरशिप मिलनी है। यह ल.ना. स्कालरशिप लिये हुए हैं ना। फिर भी नम्बरवार। बहुत बड़ा इम्तिहान है ना। स्कालरशिप पाकर ही माला बने हुए हैं। 8रतन हैं ना। 8, फिर 108, फिर 16हजार होते हैं। तो कितना पुरुषार्थ करना चाहिए। माला में पिरोने लिए। इसमें अन्तर्मुखता बहुत चाहिए। बाप तो है ही कल्याणकारी। तो कल्याण के लिए ही राय देते हैं ना। कल्याण तो सबका होना है ना। सारी दुनियां का ही होना है ;परंतु नम्बरवार। तुम यहां बाप के पास पढ़ने लिए आये हो। तुम्हारे में भी वो स्टुडेंट अच्छे हैं जो पढ़ाई पर ही ध्यान देते हैं। कोई तो बिल्कुल ही ध्यान नहीं देते हैं। ऐसे भी बहुत समझते हैं कि जो भाग्य में होगा। पढ़ाई की एम ही नहीं। तो बच्चों को याद का चार्ट रखना है। हमको अब वापस घर जाना है। ज्ञान तो यहां ही छोड़ जावेंगे। योग जावेगा। ओम।